दिनांक :- 06-07-20

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डा० फारूक आज़म (अतिथि शिक्षक)

स्नातक :- प्रथम खंड इतिहास

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

इकाई :- प्रथम

पत्र :- प्रथम

अध्याय :- मौर्योत्तर काल (राजतत्व का सिद्धांत)

इस काल में प्रत्येक राज्य में राजा की पृथक-पृथक स्थिति होती है। जैसे - शक त्रातार (मुक्ति दाता) की उपाधि लेते थे तथा राजा ति राजा की उपाधि भी धारणा करते थे।

कुषाण ने सीजर का जो कि एक रोमन पद्धति था भारतीय रूप चलाया। कुषाण शासक देवपुत्र की

उपाधि धारण करने लगे। अर्थात उन्होंने राजपद का दैवीकरण किया। संभवतः ऐसा उन्होंने चीन के प्रभाव में किया क्योंकि चीनी शासक भी स्वंय को स्वर्ग पुत्र कहते फिरते थे।

कुषाण शासकों ने षहि तथा षाहानुषाहि उपाधि धारण की जिसका मतलब होता है सामंत तथा सामंतों का स्वामी।

भारतीय स्त्रोतों में मनु भी राजपद को दैवी मानते है उनका मानना है कि राजा चाहे बालक ही क्यों नहीं वह श्रेष्ठ होता है। क्योंकि वह पृथ्वी पर आया हुआ एक देवता है।

सातवाहन शासकों ने भी राजपद का दैवीकरण किया गौतमी पुत्र शातकर्णी ने राजा की तुलना कृष्ण, बलराम भीम अर्जुन आदि से की।

सातवाहन शासक बड़े-बड़े सरकारी पदों पर व्यापारियों की भी नियुक्ति करते थे।

Scanned with CamScanner

सातवाहन अधिकारियों तथा सामंतों की पत्नियां अप
ने पति का प्रशासकीय पदनाम धारण करती थी
जैसे महासेनापति तथा महातलवारी।
रोमन शासकों के अनुकरण पर कुषाण राजाओं
ने भी मृत शासकों की स्मृति में मंदिर तथा
मूर्तियाँ स्थापित करने की परंपरा (देवकुल) प्रारंभ की।
प्रशासन : इण्डोग्रीक शासन में किसी क्षेत्र विशेष
में शासन करने के लिये मेरीदर्क नामक अधिकारी
की नियुक्ती की जाती थी जो एक प्रकार का
सैनिक प्रशासक होता था। हिन्द-यूनानी तथा कुषाण
शासकों ने प्रशासन की क्षत्रप प्रणाली की शुरु
आत की। इसके अनुसार साम्राज्य को विभिन्न
प्रांतों (क्षेत्रपियों) में बाँट दिया जाता था तथा उन
पर एक-एक क्षत्रप स्थापित कर दिया जाता

था। बड़े क्षत्रपी में महाक्षप तथा छोटे क्षत्रपी में क्षत्रप स्थापित थे।
उदाहरण के लिए कुषाणों के सारनाथ के लेख में महाक्षत्रप खरपल्लान तथा क्षत्रप वनस्पर का उल्लेख मिलता है जो क्रमशः मथुरा तथा वाराणसी में स्थापित थे। उत्तर पश्चिम में लल्ल तथा लाइक उसके क्षत्रप थे कुछ क्षत्रप अनुवांशिक होते थे तथा कभी-कभी एक ही प्रदेश में दो क्षत्रपों की भी नियुक्ति हो जाती थी।
कुषाणों के समय युगल शासन प्रणाली की शुरुआत हुई जिसमें दो राजा साथ-साथ शासन करते थे। हिन्द यूनानी शासक मिणांडर के दो राज्यपालों की सूचना शिवकोट धातुगर्भ मंजूषा लेख में मिलती है जो स्वात घाटी में शासन करते थे। इनके नाम विश्वमित्र तथा विजय मित्र थे।
शुंग काल में साम्राज्य के विभिन्न भागों में राजकुमार अथवा राजकुल से संबंधित व्यक्तियों की नियुक्ति

होती थी। वायुपुराण से इस बात की सूचना मिलती है। मालविकाग्निमित्रम् के अनुसार विदिशा का उप उपशासक अग्निमित्र था। अयोध्या अभिलेख के अनुसार धनदेव कोशल का राज्यपाल था।

शुंग काल में भी मौर्यकाल के समान एक मंत्रिपरिषद का भी अस्तित्व था क्योंकि मालविकाग्निमित्रम् में अमात्य परिषद तथा महाभाष्य में सभा का उल्लेख हुआ है। मनुस्मृति के अनुसार राजा को सात या आठ मंत्रियों की नियुक्ति करनी चाहिए। शुंगकाल में प्रशासन की सबसे छोटी इकाई ग्राम थी। सातवाहन का प्रशासन मौर्य पद्धति पर ही आधारित था। उसके समय में भी प्रांत का विभाजन आहार या विषय में हुआ था। प्रत्येक आहार के अंतर्गत एक निगम तथा कई गाँव होते थे।

Scanned with CamScanner

लेखो मे गोवर्धन, सोपारा, मामल सातवाहन आदि आहारो के विषय मे सूचना मिलती है।

अमात्य या महामात्र एक महत्त्वपूर्ण अधिकारी होता था। इस अधिकारी की चर्चा पूर्व मौर्यकाल से शुरू होती है। तथा सातवाहन काल के बाद समाप्त हो जाती है। अमात्य का अभिलेखीय साक्ष्य सातवाहन काल में ही प्रथम बार प्राप्त होता है यद्यपि साहित्यिक साक्ष्य अर्थशास्त्र के रूप में है।

गौतमीपुत्र तथा उसके पुत्र पुलुमावी ने महासेनापति नामक एक उच्च पदाधिकारी की नियुक्ति की थी

सातवाहन प्रशासन में शासनपत्रों मे देखरेख करने वाला अधिकारी पट्टिपालक कहलाता था।

सातवाहन काल में स्थानीय प्रशासन अधिकांश: सामंतो द्वारा चलाया जाता था।

Scanned with CamScanner

कार्ले तथा कन्हेरी के लेखों में ~~महा~~ महारठी तथा महा भोज का उल्लेख मिलता है। ये बड़े सामंत थे तथा इन्हें अपने-अपने क्षेत्रों में निर्मित सिक्के उत्कीर्ण करवाने का अधिकार था।

भूमि अनुदान सातवाहन ग्राम प्रशासन की महत्वपूर्ण विशेषता थी। पुरालेखों में वर्णित भूमि दान का सबसे प्राचीन दृष्टांत नागरिका का नानाघाट गुफालेख से प्राप्त होता है परंतु रियायतों सहित भूमि अनुदान का प्रथम उल्लेख ई० सन् की दूसरी शताब्दी के प्रथम चरण में गौतमी पुत्र शातकर्णी के दानपत्र में मिलता है। पश्चिमी घाट के ऊपरी भाग में महारठी तथा उत्तरी कोंकण में महाभोज नामक सामंत थे। इनका पद वंशानुगत था।

Scanned with CamScanner